The Knowledge Spectrum: An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3107-3557 (Online)

50

# भारतीय मूल्य : रामायण में दर्शित लक्ष्मण-उर्मिला की दाम्पत्य निष्ठा

**Chandrika Varma**
Research Scholar
Gujarat University Ahmedabad, Gujarat

**सारांश :**

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में रामायण केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मूल्य-बोध, नैतिकता और दार्शनिक जीवन-दृष्टि का महाकाव्य है। रामायण के पात्र भारतीय जीवन-मूल्यों के सजीव प्रतीक हैं। जहाँ राम–सीता का दाम्पत्य आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित है, वहीं लक्ष्मण–उर्मिला का दाम्पत्य संबंध अपेक्षाकृत अल्प-विमर्शित रहा है। लक्ष्मण का जीवन धर्म, सेवा और त्याग के पथ पर अग्रसर है, जबकि उर्मिला का जीवन प्रतीक्षा, संयम और आत्मसंयम का प्रतीक बनकर उभरता है। इस संबंध में दांपत्य निष्ठा का स्वरूप केवल साथ रहने में नहीं, बल्कि एक-दूसरे के कर्तव्य-निर्वाह में बाधक न बनने में दृष्टिगोचर होता है। लक्ष्मण का संयम और उर्मिला का त्याग, दोनों मिलकर भारतीय मूल्य-परंपरा के उस आदर्श को स्थापित करते हैं जिसमें व्यक्तिगत सुख से ऊपर धर्म और कर्तव्य को रखा गया है। यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि लक्ष्मण–उर्मिला की दाम्पत्य निष्ठा किसी एकतरफा बलिदान का परिणाम नहीं, बल्कि पारस्परिक समझ, नैतिक चेतना और आध्यात्मिक दृष्टि का समन्वित रूप है। रामायण की स्त्री-पात्र परंपरा में उर्मिला का चरित्र भारतीय दांपत्य मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति है। मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत में उर्मिला को केवल विरहिणी नारी के रूप में नहीं, अपितु विवेक, संयम और त्याग से युक्त आदर्श पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया है। रामायण में लक्ष्मण–उर्मिला की दाम्पत्य निष्ठा भारतीय मूल्यों की उस परंपरा को मूर्त रूप देती है, जहाँ प्रेम, धर्म और त्याग परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं लक्ष्मण के कथनों से यह सिद्ध होता है कि उनका वैराग्य पत्नी-विमुखता नहीं, बल्कि आसक्ति-त्याग का प्रतीक है। यह दाम्पत्य न केवल एक पारिवारिक संबंध है, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का सशक्त नैतिक मॉडल भी है।

**बीज शब्द :**

दाम्पत्य संबंध, विमर्शित, अपराध-बोध, कर्तव्यबोध, धर्मपालन, कारुण्यरूपा, पूर्णाहुति, भारतीय दर्शन, कर्तव्य-पथ, दांपत्य-निष्ठा, प्रतिबद्धता

---

**प्रस्तावना :**

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में रामायण केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मूल्य-बोध, नैतिकता और दार्शनिक जीवन-दृष्टि का महाकाव्य है। रामायण के पात्र भारतीय जीवन-मूल्यों के सजीव प्रतीक हैं। जहाँ राम–सीता का दाम्पत्य आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित है, वहीं लक्ष्मण–उर्मिला का दाम्पत्य संबंध अपेक्षाकृत अल्प-विमर्शित रहा है। लक्ष्मण का जीवन धर्म, सेवा और त्याग के पथ पर अग्रसर है, जबकि उर्मिला का जीवन प्रतीक्षा, संयम और आत्मसंयम

का प्रतीक बनकर उभरता है। इस संबंध में दांपत्य निष्ठा का स्वरूप केवल साथ रहने में नहीं, बल्कि एक-दूसरे के कर्तव्य-निर्वाह में बाधक न बनने में दृष्टिगोचर होता है। उर्मिला अपने व्यक्तिगत दुःख और वियोग को भीतर धारण कर पति के धर्म-पथ को सर्वोपरि मानती है। उसका मौन त्याग भारतीय नारी-मूल्य की उस परंपरा को रेखांकित करता है, जहाँ सहनशीलता दुर्बलता नहीं, बल्कि आत्मबल का रूप बन जाती है। दूसरी ओर लक्ष्मण का चरित्र यह स्पष्ट करता है कि कर्तव्य-पालन केवल बाह्य तपस्या नहीं, बल्कि अंतःकरण के द्वंद्व, अपराध-बोध और नैतिक उत्तरदायित्व से भी जुड़ा होता है। दांपत्य संबंध में यह द्वंद्व परस्पर समझ और सम्मान के माध्यम से संतुलित होता है। लक्ष्मण और उर्मिला दोनों के भाव यह दर्शाते हैं कि सच्ची निष्ठा केवल त्याग में नहीं, बल्कि उस त्याग की पारस्परिक स्वीकृति में निहित है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य रामायण में लक्ष्मण–उर्मिला के संवादों के आधार पर उनकी दाम्पत्य निष्ठा का भारतीय मूल्य-परंपरा के संदर्भ में विश्लेषण करना है।

लक्ष्मण और उर्मिला का दाम्पत्य त्याग, संयम और कर्तव्यबोध पर आधारित है। लक्ष्मण का जीवन राम-सेवा और धर्मपालन के लिए समर्पित है, जबकि उर्मिला का जीवन इस त्याग को मौन स्वीकृति और आत्मिक दृढ़ता के साथ स्वीकार करता है। यह संबंध केवल व्यक्तिगत भावनाओं का नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दायित्वों का प्रतीक है। उर्मिला के संवाद स्पष्ट करते हैं कि वे पति को केवल सांसारिक संबंध में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आश्रय के रूप में देखती हैं-"मेरे लिए तो वह परमेश्वर-स्वरूप हैं-पति परमेश्वर।"[1] यह कथन भारतीय दाम्पत्य की उस अवधारणा को प्रकट करता है जहाँ विवाह आत्मोन्नति का माध्यम बनता है। दूसरी ओर लक्ष्मण के संवाद- "राम !" लक्ष्मण ने आद्र स्वर में कहा यह क्या कह रहे हैं? आपके चरणारविंदो की चाकरी के लिए संसार महंगा नहीं है। आपकी सेवा का कोई मोल नहीं है- अमूल्य है वह। संसार की नश्वरता ही इसका मोल है। मैंने अनित्य छोड़कर नित्य की आराधना आरंभ की है राम! मेरे भैया।"[2] उनके नैतिक दृढ़ संकल्प को व्यक्त करते हैं। लक्ष्मण का संयम और उर्मिला का त्याग, दोनों मिलकर भारतीय मूल्य-परंपरा के उस आदर्श को स्थापित करते हैं जिसमें व्यक्तिगत सुख से ऊपर धर्म और कर्तव्य को रखा गया है। यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि लक्ष्मण–उर्मिला की दाम्पत्य निष्ठा किसी एकतरफा बलिदान का परिणाम नहीं, बल्कि पारस्परिक समझ, नैतिक चेतना और आध्यात्मिक दृष्टि का समन्वित रूप है।

रामायण भारतीय सभ्यता का वह आधार-ग्रंथ है जिसमें जीवन के प्रत्येक पक्ष-धर्म, नीति, कर्तव्य, प्रेम और त्याग का संतुलित निरूपण मिलता है। भारतीय दाम्पत्य परंपरा में विवाह को केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि धर्म का साधन माना गया है। लक्ष्मण और उर्मिला का संबंध इसी दृष्टि का प्रत्यक्ष उदाहरण है। लक्ष्मण का जीवन राम-सेवा के लिए समर्पित है। उनका उपर्युक्त लिखा गया कथन-"मैंने अनित्य छोड़कर नित्य की आराधना आरम्भ की है"- यह स्पष्ट करता है कि वे सांसारिक सुखों को तुच्छ नहीं मानते, बल्कि उन्हें धर्म के अधीन रखते हैं। यहाँ "अनित्य" का त्याग स्त्री-त्याग नहीं, बल्कि आसक्ति-त्याग है। जब राम सीता को याद करते हुए लक्ष्मण से कहते हैं "सीता मुझ अनादि नर पुरुष की अनादि नारी प्रकृति स्वरूपा शक्ति है लक्ष्मण। इससे मैं एक पल भी विलग कैसे हो सकता हूं। सीता ! सीता को पुकारता हूं तो मेरा रोम रोम सिहर उठता है तब तुम जो हो - उस वत्सला कारुण्यरूपा उर्मिला की कमी एक पल के लिए भी सोचते हो बोलो लक्ष्मण!"[3] अर्थात मैं सीता के बिना नहीं रह सकता तो तुम उर्मिला के बिना कैसे रह सकते हो लक्ष्मण ने श्री राम को नमन करते हुए कहा- "स्त्री सृष्टि की सतत रचना और वंशवृद्धि के लिए ही है। पत्नी धर्मपालन के व्रत की सफलता तथा गृहस्थ यज्ञ की पूर्णाहुति के लिए ही है, स्वामिन्। आप-में नहीं है। भाभी आपके लिए प्रकृति हो सकती है, किन्तु वह मेरे लिए पत्नी है, धर्मपत्नी है। उर्मिला मेरी शक्ति नहीं-विश्वास है, विराम है, शान्ति है- हाँ राम, मेरे

भैया !"[4] इस संदर्भ में लक्ष्मण अपनी पत्नी उर्मिला के प्रति भावनाएँ स्पष्ट करते हैं। यहाँ लक्ष्मण का भाव स्पष्ट है कि वे उर्मिला को केवल एक संगीनी या प्रेम-संबंधी अस्तित्व के रूप में नहीं देखते, बल्कि उनके लिए उर्मिला एक आध्यात्मिक और मानसिक शांति देने वाली शक्ति है। यह भारतीय मूल्य-परंपरा में वैराग्य और कर्तव्य के संतुलन को दर्शाता है। उर्मिला का चरित्र इस संतुलन को और अधिक स्पष्ट करता है। वे लक्ष्मण के निर्णय को प्रश्नांकित नहीं करतीं, न ही उसे चुनौती देती हैं। उनका कथन-"मेरे लिए तो वह परमेश्वर-स्वरूप हैं-पति परमेश्वर"-यह दर्शाता है कि उनका समर्पण अंधभक्ति नहीं, बल्कि सचेत आस्था है। भारतीय दर्शन में पति को 'परमेश्वर' कहना सत्ता-संबंध नहीं, बल्कि दायित्व और संरक्षण के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। उर्मिला का यह भी कहना- "पति जीवन-संगिनी है, परंतु वह अपने धनुष की प्रत्यंचा को ही जानता है"[5]- लक्ष्मण के स्वभाव की यथार्थपरक समझ को प्रकट करता है। यह कथन किसी प्रकार की शिकायत नहीं, बल्कि स्वीकार का भाव है। उर्मिला जानती हैं कि लक्ष्मण का धर्म उन्हें उनसे दूर रखेगा, फिर भी वे इस दूरी को साधना में परिवर्तित कर लेती हैं। यही भारतीय नारी-मूल्य का मूल है- मौन सहनशीलता नहीं, बल्कि आत्मिक दृढ़ता।

रामायण की स्त्री-पात्र परंपरा में उर्मिला का चरित्र भारतीय दांपत्य मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति है। मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत में उर्मिला को केवल विरहिणी नारी के रूप में नहीं, अपितु विवेक, संयम और त्याग से युक्त आदर्श पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया है। लक्ष्मण के वन-गमन की स्थिति में उर्मिला का आचरण यह प्रमाणित करता है कि भारतीय दांपत्य-निष्ठा केवल साथ रहने में नहीं, बल्कि कर्तव्य-पथ में पति को अविचल समर्थन देने में निहित है। वह अपने निजी सुख-दुख को गौण रखकर लक्ष्मण के धर्मनिष्ठ निर्णय को स्वीकार करती है और उन्हें किसी भी प्रकार के भावात्मक बंधन में नहीं बाँधती। इसी संदर्भ में उर्मिला के ये कथन उनके आत्मसंयम, विवेक और दांपत्य मर्यादा को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते हैं—

"मत गज बनकर, विवेक न छोड़ना।
कर कमल कह, कर न मेरा तोड़ना।"[6]

अर्थात् - कर्तव्य-पथ पर चलते समय भी बुद्धि और मर्यादा बनाए रखना। मेरे प्रेम और स्नेह को इतना भी न पकड़ लेना कि वह तुम्हारे कर्तव्य में बाधा बन जाए। इस पंक्ति का मूल संदेश यह है कि सच्ची दांपत्य-निष्ठा सिर्फ साथ रहने में नहीं, बल्कि कर्तव्य में बाधक न बनने में है।

भारतीय मूल्य-परंपरा में निष्ठा का अर्थ केवल भावनात्मक जुड़ाव नहीं, बल्कि नैतिक प्रतिबद्धता है। लक्ष्मण की निष्ठा राम के प्रति है, किंतु वह उर्मिला के प्रति उत्तरदायित्वहीन नहीं बनाती। उर्मिला की निष्ठा लक्ष्मण के प्रति है, किंतु वह आत्म-विस्मृति में नहीं बदलती। दोनों की निष्ठा एक उच्चतर उद्देश्य-धर्म- में एकीकृत हो जाती है। रामायण का यह प्रसंग आधुनिक संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है। आज जब दाम्पत्य संबंध अधिकार और अपेक्षा के तनाव से घिरे हैं, तब लक्ष्मण–उर्मिला का संबंध त्याग, संयम और समझ का आदर्श प्रस्तुत करता है। यह संबंध यह सिखाता है कि सच्ची दाम्पत्य निष्ठा व्यक्तिगत आकांक्षाओं के दमन में नहीं, बल्कि उन्हें उच्च नैतिक उद्देश्य से जोड़ने में निहित है।

**निष्कर्ष :**

अंततः कहा जा सकता है कि रामायण में लक्ष्मण–उर्मिला की दाम्पत्य निष्ठा भारतीय मूल्यों की उस परंपरा को मूर्त रूप देती है, जहाँ प्रेम, धर्म और त्याग परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं लक्ष्मण के कथनों से यह सिद्ध होता है कि उनका वैराग्य पत्नी-विमुखता नहीं, बल्कि आसक्ति-त्याग का प्रतीक है। वे उर्मिला को 'शक्ति' के रूप

में नहीं, बल्कि 'विश्वास, विराम और शांति' के रूप में स्वीकार करते हैं, जिससे उनके दांपत्य संबंध का आध्यात्मिक और मानसिक आधार स्पष्ट होता है। वहीं उर्मिला का चरित्र यह प्रमाणित करता है कि भारतीय नारी-दृष्टि में सहनशीलता दुर्बलता नहीं, बल्कि आत्मबल और विवेक का स्वरूप है। उनका मौन त्याग, लक्ष्मण के कर्तव्य-पथ में किसी भी प्रकार का भावात्मक अवरोध न बनने देने का संकल्प, दांपत्य निष्ठा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। यह दाम्पत्य न केवल एक पारिवारिक संबंध है, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का सशक्त नैतिक मॉडल भी है।

**संदर्भ सूची :**

1. राम लक्ष्मण - जनार्दन राय नगर, प्रकाशन- श्याम प्रकाशक, संस्करण 2010, पृ. 67
2. वही, पृ. 2
3. वही, पृ. 3
4. वही, पृ. 4
5. वही, पृ. 67
6. मैथिलीशरण गुप्त भक्ति और काव्य, डॉ.सी.एल.गोसाई, प्रशासन रावत प्रकाशक, प्रथम संस्करण 2017 पृ. 21